ओ3म् संकीर्तन

1) अनन्तगुण गण भूषित ओ3म्
2) शुद्ध ब्रह्म परात्पर ओ3म्
3) शबल ब्रह्म सुनायक ओ3म्
4) कालात्मक परमेश्वर ओ3म्
5) प्रलयानन्तर सुस्थित ओ3म्
6) ईक्षित सृष्टि विधायक ओ3म्
7) व्यापक यज्ञ प्रसारक ओ3म्
8) लोकाखिल गतिदायक ओ3म्
9) जगन्नियन्ता पालक ओ3म्
10) जनता दु:ख प्रभंजक ओ3म्
11) भक्तप्रिय सुखदायक ओ3म्
12) सूर्यादिक द्युति धारक ओ3म्
13) परम सहायक प्रियवर ओ3म्
14) नित्य तृप्त सर्वाश्रय ओ3म्
15) ज्ञानरूप सत्प्रेरक ओ3म्
16) सकल द्रव्य व्यापक ओ3म्
17) श्रोत्रादीन्द्रिय शक्तिद ओ3म्
18) कर्माश्रित फल दायक ओ3म्
19) अद्भुत तेजो बलयुत ओ3म्
20) श्रेय: प्राप्ति सुसाधक ओ3म्
21) हर्षित मति संदायक ओ3म्
22) मातृप्रेम परिपोषक ओ3म्
23) स्नेहार्द्रित पितृ पालक ओ3म्
24) व्याहृतिलोक विभाजक ओ3म्
25) सकल ऋद्धि सिद्धिप्रद ओ3म्
26) वेद चतुष्टय दायक ओ3म्
27) अग्न्यादिक ऋषिपूजित ओ3म्
28) साधन साध्य समुच्चय ओ3म्

OM SANKEERTAN

1)	Anant guna gana bhooshit	Om
2)	Shuddha brahama paraatpara	Om
3)	Shabala brahma sunaayak	Om
4)	Kaalaatmak parmeshwara	Om
5)	Pralayaanantara Sushthita	Om
6)	Eekshita srishti vidhaayak	Om
7)	Vyaapaka yajna prasaarak	Om
8)	Lokaakhila gati daayaka	Om
9)	Jaganniyanta paalaka	Om
10)	Jantaa dukkha prabhanjaka	Om
11)	Bhakta priya sukhadaayaka	Om
12)	Sooryadika dyuti dhaaraka	Om
13)	Parama sahaayak priyavara	Om
14)	Nitya tripta sarvaashraya	Om
15)	Jnaana roopa satpreraka	Om
16)	Sakala dravya vyaapaka	Om
17)	Shrotraadeendriya shaktida	Om
18)	Karmaashrita phala daayaka	Om
19)	Adbhuta tejo balayuta	Om
20)	Shreyah praapti susaadhaka	Om
21)	Harshita mati sandaayaka	Om
22)	Maatri prema pariposhaka	Om
23)	Snehardrita pitri paalaka	Om
24)	Vyaahriti loka vibhaajaka	Om
25)	Sakala vriddhi siddhi prada	Om
26)	Veda chatushtaya dayaka	Om
27)	Agnyaadik rishi Poojita	Om
28)	Saadhan saadhya samuchaya	Om

29) प्राण दक्ष संदायक ओ3म्
30) इन्द्र बृहस्पति सुनामक ओ3म्
31) ऋतु परिवर्तन कारण ओ3म्
32) ऋतुमूलक हितदायक ओ3म्
33) ज्ञान सूर्य विस्तारक ओ3म्
34) सुर संपूजित सुरवर ओ3म्
35) सत्संकल्प प्रपूरक ओ3म्
36) धर्माधर्म सुशिक्षक ओ3म्
37) जन्म रहित जन्म प्रद ओ3म्
38) देवादिक ऋण मोचक ओ3म्
39) क्लेश विमुक्त विशेषण ओ3म्
40) स्नायु रहित सुख पूरक ओ3म्
41) दैहिक रोग निवारक ओ3म्
42) तनु पालक दीर्घायुद ओ3म्
43) आत्मिक बल संदायक ओ3म्
44) मानव लक्ष्य महाश्रय ओ3म्
45) नित्य निरंजन निरुपम ओ3म्
46) भव भय भंजन भेषज ओ3म्
47) आर्त त्राण परायण ओ3म्
48) अज्ञानादिक रिपुहर ओ3म्
49) दारिद्र्यादि विनाशक ओ3म्
50) परमैश्वर्य सुदायक ओ3म्
51) सर्वानन्द सुसाधक ओ3म्
52) साम्राज्यार्क प्रसारक ओ3म्
53) विश्व विनोदक विभुवर ओ3म्
54) उद्बोधित हृदयवर्धक ओ3म्
55) निर्मल नायक शर्मद ओ3म्
56) लोभादिक रिपु नाशक ओ3म्

29)	Praana daksha sandaayaka	Om
30)	Indra brihaspati sunaamaka	Om
31)	Ritu parivartana kaarana	Om
32)	Ritu moolaka hita daayaka	Om
33)	Jnaana soorya vistaaraka	Om
34)	Sur sampoojita suravara	Om
35)	Satsankalpa prapooraka	Om
36)	Dharmaadharm sushikshaka	Om
37)	Janma rahita janmaprada	Om
38)	Devaadika rina mochaka	Om
39)	Klesha vimukta visheshana	Om
40)	Snaayu rahita sukha pooraka	Om
41)	Daihika roga nivaaraka	Om
42)	Tanu paalaka deerghaayuda	Om
43)	Aatmika bal sandaayaka	Om
44)	Maanava lakshya mahaashrya	Om
45)	Nitya niranjana nirupama	Om
46)	Bhava bhaya bhanjana bheshaja	Om
47)	Aarta traana paraayana	Om
48)	Ajnaanaadika rupuhara	Om
49)	Daaridryaadi vinaashaka	Om
50)	Paramaishwarya sudaayaka	Om
51)	Sarvaananda susaadhaka	Om
52)	Samraajyaarka prasaaraka	Om
53)	Vishwa vinodaka vibhuvara	Om
54)	Udbodhita hridvardhaka	Om
55)	Nirmala naayaka sharmada	Om
56)	Lobhadika ripu naashaka	Om

57)	तेजः प्रद तेजोमय	ओ३म्
58)	ओजः प्रद ओजोमय	ओ३म्
59)	श्रद्धाप्रद श्रद्धामय	ओ३म्
60)	रसवाहक सर्वेश्वर	ओ३म्
61)	दान सृष्टि संचालक	ओ३म्
62)	रस भेदक संवर्धक	ओ३म्
63)	पाप निवारक मोक्षद	ओ३म्
64)	मृत्यु रूप संशोधक	ओ३म्
65)	चित्र विचित्र महातुथ	ओ३म्
66)	सत्य सनातन धर्मद	ओ३म्
67)	होमार्पित हवि भेदक	ओ३म्
68)	सभ्य सभा प्रतिभा प्रिय	ओ३म्
69)	विस्तृत शान्ति विधायक	ओ३म्
70)	वरुण प्रजापति प्रेरक	ओ३म्
71)	स्थावर जंगम रक्षक	ओ३म्
72)	विद्वज्जन मति प्रेरक	ओ३म्
73)	विक्रम विष्णु विराडसि	ओ३म्
74)	दान रहित नर नाशक	ओ३म्
75)	त्याग युक्त नर भद्रद	ओ३म्
76)	मन्यु रूप मन्यु प्रद	ओ३म्
77)	वीर्य रूप वीर्य प्रद	ओ३म्
78)	सहन रूप सह दायक	ओ३म्
79)	अचल रूप संचालक	ओ३म्
80)	रुद्र भीम भय वाहक	ओ३म्
81)	सज्जन संमत सौख्यद	ओ३म्
82)	वर्ण चतुष्टय स्थापक	ओ३म्
83)	सर्व न्यून संपूरक	ओ३म्
84)	विद्वेषादिक भंजक	ओ३म्

57)	Tejah prada tejomaya	Om
58)	Ojahaprada ojomaya	Om
59)	Shraddhaaaprada shraddhaamaya	Om
60)	Rasavaahaka sarveshwara	Om
61)	Daana srishti sanchaalaka	Om
62)	Rasabhedaka samvardhaka	Om
63)	Paapa nivaraka mokshada	Om
64)	Mrityu roopa samshodhaka	Om
65)	Chitra vichitra mahaatutha	Om
66)	Satya sanaatana dharmada	Om
67)	Homaarpit havi bhedaka	Om
68)	Sabhya sabhaa pratibhaa priya	Om
69)	Vishtrita shaanti vidhaayaka	Om
70)	Varuna prajaapati preraka	Om
71)	Sthaavara jangama rakshaka	Om
72)	Vidwajjana mati preraka	Om
73)	Vikrama Vishnu viraadasi	Om
74)	Daan rahita nara naashaka	Om
75)	Tyaaga yukta nara bhadrada	Om
76)	Manyuroopa manyuprada	Om
77)	Veeryaroopa veeryaprada	Om
78)	Sahanaroopa sahadaayaka	Om
79)	Achalaroopa sanchaalaka	Om
80)	Rudra bheema bhayavaahaka	Om
81)	Sajjana sammata saukhyada	Om
82)	Varn chatushtaya sthaapaka	Om
83)	Sarva nyoona sampooraka	Om
84)	Vidweshaadika bhanjaka	Om

85)	सर्व मित्र संपादक	ओ3म्
86)	सृष्टि स्थिति लय कारक	ओ3म्
87)	क्षोभ रहित नभ नामक	ओ3म्
88)	मंगल मूल मयोभव	ओ3म्
89)	शंकर रूप मयस्कर	ओ3म्
90)	वष्टु धियावसु रसवति	ओ3म्
91)	सत्पथ दर्शक पुरोहित	ओ3म्
92)	नाश निवारक स्वस्तिद	ओ3म्
93)	सकल यज्ञ स्वीकारक	ओ3म्
94)	उक्षित रक्षक शिक्षक	ओ3म्
95)	विश्व रूप विश्वावसु	ओ3म्
96)	विश्व मित्र वैश्वानर	ओ3म्
97)	पुण्य पुरुतम पुरुष	ओ3म्
98)	पाहि निरन्तर पूषण	ओ3म्
99)	पाहि प्रवाहण प्रभुवर	ओ3म्
100)	अद्भुत मित्र कृपाकर	ओ3म्
101)	मित्र रूप व्रत पालक	ओ3म्
102)	निश्चित मित्र निराश्रय	ओ3म्
103)	अधमोद्धारक चिन्मय	ओ3म्
104)	सत्य सुखात्मक सर्वद	ओ3म्
105)	निर्गुण रूप निरामय	ओ3म्
106)	आनन्दामृत वर्षक	ओ3म्
107)	गणनायक गण पालक	ओ3म्
108)	मर्माच्छादक विभुवर	ओ3म्
	अनन्तगुण गण भूषित	ओ3म्
	शुद्ध ब्रह्म परात्पर	ओ3म्

85)	Sarvamittra sampaadaka	Om
86)	Srishti sthiti layakaaraka	Om
87)	Kshobha rahita nabhanaamaka	Om
88)	Mangala moola mayobhava	Om
89)	Shankar roopa mayaskara	Om
90)	Vashtu dhiyaavasu rasvati	Om
91)	Satpatha darsha purohita	Om
92)	Naasha nivaaraka swastida	Om
93)	Sakala Yajna sweekaaraka	Om
94)	Ukshita rakshaka shikshaka	Om
95)	Vishwa roopa vishwaavasu	Om
96)	Vishvamitra vaishvaanara	Om
97)	Punya purootama poorusha	Om
98)	Paahi nirantara pooshana	Om
99)	Paahi pravahana prabhuvara	Om
100)	Adbhuta mitra kripaakara	Om
101)	Mitra roopa vrata paalaka	Om
102)	Nishachitta mitra niraashraya	Om
103)	Adhamoddhaaraka chinmaya	Om
104)	Satya sukhatmaka sarvad	Om
105)	Nirgunaroopa niraamaya	Om
106)	Aanandaamrita varshak	Om
107)	Gananaayaka ganapaalaka	Om
108)	Marmaachhaadaka vibhuvara	Om
	Ananta guna gana bhooshita	Om
	Shuddha brahma paraatpara	Om

सन्ध्या–ब्रह्मयज्ञ

गायत्री मन्त्र

ओ3म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

आचमन मन्त्र

दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर निम्न मन्त्र बोलकर तीन आचमन करें।

ओ3म्। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।

अंगस्पर्श मन्त्र

बाँये हाथ की हथेली में जल लेकर दाँये हाथ की बीच की दो उंगलियों को जल में डुबाकर निम्न मन्त्रों से अंगस्पर्श करें।

ओं वाक् वाक्। मुख का दक्षिण और वाम पार्श्व

ओं प्राणः प्राणः। नासिका के दक्षिण और वाम छिद्र

ओं चक्षुः चक्षुः। दक्षिण और वाम नेत्र

ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। दक्षिण और वाम श्रोत्र

SANDHYAA / BRAHAM YAJNA

GAAYATRI MANTRA

Om. Bhuurbhuvah swah.
Tat saviturvarenyam bhargo devasya dheemahi.
Dhiyo yo nah prachodayaat.

AACHAMAN (Sipping of Water)

Take a tablespoonful of water into the palm of your right hand and sip it after reciting the following Mantra.

Om. Shanno devirabhishtaya aapo bhavantu peetaye. Samyorabhi sravantu nah.

ANGASPARSHA (Touching of body parts)

Put water in the palm of your left hand. Using the two middle fingers of your right hand, touch the water and symbolically use it to touch the various organs while reciting the following Mantras.

Om vaak vaak :	touch right and left side of the mouth.
Om praanah praanah :	touch right and then left nostrils.
Om chakshuh chakshuh :	touch right and then left eyes.
Om shrotram shrotram :	touch right and then left ears.

ओं नाभिः। नाभि

ओं हृदयम्। हृदय

ओं कण्ठः। कण्ठ

ओं शिरः। शिर

ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। दोनों भुजाओं के मूल स्कन्धा

ओं करतल करपृष्ठे। दोनों हथेलियों के ऊपर और तले स्पर्श करें

मार्जन मन्त्राः

बाँये हाथ की हथेली में जल लेकर दाँये हाथ की बीच की दो उंगलियों को जल में डुबाकर निम्न मन्त्रों से जल का छींटा देवें।

ओं भूः पुनातु शिरसि। इस मन्त्र से शिर

ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। इससे दोनों नेत्रों

ओं स्वः पुनातु कण्ठे। इससे कण्ठ

ओं महः पुनातु हृदये। इससे हृदय

Om naabhih :	touch the navel.
Om hridayam :	touch the heart.
Om kanthah :	touch the throat.
Om shirah :	touch the head
Om baahubhyaam yashobalam :	the right and then left arms.
Om karatala karaprishthe :	both palms (front and back)

MAARJAN MANTRA (purification of the Organs)

Put water in the palm of your left hand and dipping the two middle fingers of the right hand in it, sprinkle water on the body parts indicated below while reciting the Mantras.

Om bhooh punaatu shirasi :	Sprinkle the head.
Om bhuvah punaatu netrayoh :	Sprinkle the eyes
Om swah punaatu kanthe :	Sprinkle the throat.
Om mahah punaatu hridaye :	Sprinkle the heart region

ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। इससे नाभि

ओं तपः पुनातु पादयोः। इससे दोनों पैर

ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। इससे पुनः मस्तक

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। इससे सब अंगों पर
छींटा देवें।

प्राणायाम मन्त्राः

निम्न मन्त्रों का मन में ध्यान करते हुए कम से कम तीन प्राणायाम करें।

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।

अघमर्षण मन्त्राः

ओ3म्। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसो
अध्यजायत।ततो रात्र्यजायतः ततः समुद्रो
अर्णवः।।1।।

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।अहोरात्राणि
विदधाद् विश्वस्य मिषतो वशी।। 2।।

सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।3।।

Om janah punaatu naabhyaam :	Sprinkle the navel region
Om tapah punaatu paadayoh :	Sprinkle the feet
Om satyam punaatu punah shirasi :	Sprinkle the head
Om kham brahma punaatu sarvatra :	Sprinkle the whole body

PRAANAAYAAM MANTRA (Control of the breath)

Recite the following Mantra and contemplate upon their meaning while doing Praanaayaam.

Om bhuh. Om bhuvah. Om swah. Om mahah.
Om janah. Om tapah. Om satyam.

AGHAMARSHAN MANTRA (Eliminating sins)

Om. Ritam cha satyam chaabhiddhaat tapaso dhyajaayata.
Tato raatrya jaayata tatah samudro arnavah. {1}

Samudraad arnavaadadhi samvatsaro ajaayata.
Ahoraatraani vidadhad vishwasya mishato vashi. {2}

Suryaa chandramasau dhaataa yathaa purvam akalpayat.
Divam cha prithivim cha antariksham atho swah. {3}

आचमन मन्त्र

ओ3म् । शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ।

मनसा परिक्रमा मन्त्राः

ओ3म् । प्राची दिगग्नि–रधिपतिरसितो रक्षिता आदित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।1 ।।

दक्षिणा दिगिन्द्रो अधिपतिस् तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।2 ।।

प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।3 ।।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता अशनिरिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।4 ।।

AACHAMAN MANTRA (Sipping of Water)

Om. Shanno devirabhishtaya aapo bhavantu peetaye. Samyorabhi sravantu nah.

MANASAA PARIKRAMAA MANTRA

(Visualising God in all direction)

Om. Praachi digagnir adhipatirasito rakshitaa adityaa ishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu.Yosmaan dweshti yam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah. {1}

Dakshinaa digindro adhipatis tirashchiraji rakshitaa pitara ishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosmaan dweshti yam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah. {2}

Pratichi dig varuno adhipatih pridaaku rakshitaa annam ishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosmaan dweshti yam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah. {3}

Udichi dik somo adhipatih swajo rakshitaa ashanirishavah. Tebhyo namodhipatibhyo namo rakshitrbhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosmaan dweshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah. {4}

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरूधा इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।5।।

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।6।।

उपस्थान मन्त्राः

ओ3म्। उद् वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।1।।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।।2।।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवीरन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।3।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।4।।

Dhruvaa digvishnur adhipatih kalmaasha grivo rakshitaa veerudha ishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosmaan dweshti yam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah. {5}

Urdhvaa dig brihaspatir adhipatih shwitro rakshitaa varsham ishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosmaan dweshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah. {6}

UPASTHAAN MANTRA

(Experiencing Nearness to God)

Om. Udvayam tamasas pari swah pashyanta uttaram. Devam devatraa suryam agnamah jyotir utamam. {1}

Udutyam jaatavedasam devam vahanti ketavah.
Drishe vishwaaya suryam. {2}

Chitram devaanaam udagaad anikam chakshur mitrasya varunasya agneh. Aapraa dyaavaa prithivir antariksham surya aatma jagatas tasthushashcha swaahaa. {3}

Tachchakshur devahitam purastaat chhukram uchcharat. Pashyema sharadah shatam jivema sharadah shatam shrinuyama sharadah shatam prabravama sharadah shatamadinaah syaama sharadah shatam bhuyashcha sharadah shataat. {4}

गायत्री मन्त्र

ओ3म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

समर्पण मन्त्र

हे ईश्वर दयानिधो! भवत् कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

नमस्कार मन्त्र

ओ3म्। नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शंकराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

इति सन्ध्या–उपासना–विधिः

GAAYATRI MANTRA

Om bhuurbhuvah swah.
Tatsaviturvarenyam bhargo devasya dheemahi.
Dhiyo yo nah prachodayaat.

SAMARPANA MANTRA (offering the Self to God)

Hey ishwara dayaanidhe, Bhavat kripayaanena japa upaasanaadi karmanaa dharma artha kaama mokshaanaam sadyah siddhir bhavennah.

NAMASKAAR MANTRA

Om. Namah shambhavaaya cha mayobhavaaya cha.
Namah shamkaraaya cha mayaskaraaya cha.
Namah shivaaaya cha shivataraaya cha.

(Here ends the Sandhyaa)

ईश्वर स्तुति–प्रार्थना–उपासना मन्त्राः

ओ3म्। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।1।।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।2

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।3

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।4

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।5

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।6

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाः अमृतमान–शानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्तः।।7

ISHWARA STUTI-PRAARTHANAA UPAASANAA MANTRAS

(Glorification, Prayer and Worship of God)

**Om. Vishwaani deva savitar duritaani paraasuva.
Yad bhadram tanna aasuva. {1}**

Hiranya garbhah samavartata agre bhutasya jaatah patireka aasit. Sa daadhara prithivim dyaamutemaam kasmai devaaya havishaa vidhema. {2}

Ya aatmada baladaa yasya vishwa upaasate prashisham yasya devaah. Yasya chhaaya amritam yasya mrityuh kasmai devaaya havishaa vidhema. {3}

Yah praanato nimishato mahitwaika idraaja jagato babhuva. Ya ishe asya dwipadash chatushpadah kasmai devaaya havishaa vidhema. {4}

Yena dyaurugraa prithivi cha dridhaa yena swah stabhitam yena naakah. Yo antarikshe rajaso vimaanah kasmai devaaya havishaa vidhema. {5}

Prajaapate na twadetaanyanyo vishwaa jaataani parita babhuva. Yatkaamaaste juhumas tanno astu vayam syaama patayo rayinam. {6}

Sa no bandhur janitaa sa vidhaataa dhaamaani veda bhuvanaani vishwaa. Yatra devaa amritamaana shaanaas triteeye dhaaman adhyairyantah. {7}

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।।8

देवयज्ञ /अग्निहोत्र

आचमन मन्त्राः

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्रों से प्रत्येक मन्त्र से एक–एक आचमन करें।

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।1।।

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।।2।।

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।3।।

अंगस्पर्श मन्त्राः

बाँये हाथ की हथेली में जल लेकर दाँये हाथ की बीच की दो उंगलियों को जल में डुबाकर निम्न मन्त्रों से अंगस्पर्श करें।

ओं वाङ्म आस्ये अस्तु।। मुख

ओं नसोर्मे प्राणो अस्तु।। नासिका के छिद्र

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। दोनों आँखें

Agne naya supathaa raaye asmaan vishwaani deva vayunaani vidwaan. Yuyo dhyasmat juhuraanameno bhuyishthaan te nama uktim vidhema. {8}

DEVAYAJNA / AGNIHOTRA

AACHAMAN MANTRA

(Mantras for the Ritual of sipping water)

Put water in the palm of your right hand and sip after each recitation of the following three Mantras:

Om amritopastaranamasi swaahaa.

Om amritaapidhaanamasi swaahaa.

Om satyam yashah shreermayi shreeh shrayataam swaahaa.

ANGA SPARSHA MANTRA

(Symbolic touching of the different organs of the body)

Take little water in the left palm and wet the tips of the two middle fingers of the right- hand and touch different parts of the body with them first right and than left as you recite the following Mantras:

Om vaangma aasyestu. – the mouth

Om nasorme praano astu. – the nostrils

Om akshnorme chakshur astu. – the eyes

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। दोनों कान

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु।। दोनों बाहु

ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।। दोनों जंघा

ओं अरिष्टानि मे अंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।। सारे शरीर पर जल छिडकें।।

अग्नि प्रदीपन मन्त्र

निम्न मन्त्र का पाठ करके दीपक प्रज्वलित करें।

ओं भूर्भुवः स्वः।।

अग्न्याधान मन्त्र

निम्न मन्त्र का पाठ करके दीपक से कपूर जलाकर हवन कुण्ड में रखें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तास्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठे अग्निमन्नादमन्नाद्याया-दधे।।

अग्नि प्रदीपन मन्त्र

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

Om karnayorme shrotramastu. – the ears

Om baahvorme balamastu – the arms

Om oorvorma ojo astu – the thighs

Om arishtaani me angaani tanustanvaa me saha santu.
(all the body)

AGNI PRADEEPAN MANTRA

Light the Deepak after reciting the following Mantra.

Om bhuurbhuvah swah.

AGNYAADHYAAN MANTRA

While reciting the following Mantra, ignite pieces of camphor in a spoon from the Deepak and put the fire into the Havan Kund (fire vessel) wherein pieces of wood have been arranged.

Om bhuurbhuvah swardyauriva bhuumnaa prithiveeva varimnaa. Tasyaaste prithivi devayajani prishthe agni mannaadam annadyaay aadadhe.

Reciting the following mantra, ablaze the fire properly.

Om udbudhya swaagne prati jaagrihi twamishtaa poorte sam srijethaam ayam cha. Asmint sadhaste adhyuttarasmin vishwe devaa yajamaanash cha seedata.

समिदाधान मन्त्रा:

पहली समिधा

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धास्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधाय स्वाहा।।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।1।।

दूसरी समिधा

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन।।
ओम् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा।।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।2।।

तीसरी समिधा

ओम् तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।।
इदमग्नये अंगिरसे इदन्न मम।।3।।

पंच घृत आहुति

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धास्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधाय स्वाहा।।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

SAMIDAADHAAN MANTRA
(Offering oblations of firewood sticks)

(First samidhaa)
Om ayanta idhma aatmaa jaatavedas tenedhyaswa vardhaswa cheddha vardhaya chaasmaan prajayaa pashubhir brahma varchasena annaadyena samedhaya swaahaa.
Idamagnaye jaatavedase idam na mama.

(Second samidhaa)
Om samidhaagnim duvasyata ghritair bodhayata atithim aasmin havyaa juhotana.
Om susamiddhaaya shochishe ghritam teevram juhotana. Agnaya jaatavedase swaahaa.
Idamagnaye jaatavedase idam na mama.

(Third samidhaa)
Om tantwaa samidbhir angiro ghritena vardhayaamasi. Brihat chhochaa yavishthaya swaahaa. Idamagnaye angirase idam na mama.

PANCH GHRIT AHUTTI
(Mantra for five oblations of Ghee)

Om ayanta idhma aatmaa jaatavedas tenedhyaswa vardhaswa cheddha vardhaya chaasmaan prajayaa pashubhir brahma varchasena annaadyena samedhaya swaahaa.
Idamagnaye jaatavedase idam na mama.

जल सेचन मन्त्राः

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व।।1।। इससे पूर्व

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व।।2।। इससे पश्चिम

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व।।3।। इससे उत्तर

ओम् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।4।।
इस मन्त्र से यज्ञवेदी के चारों ओर जल छिडकावें।

प्रातःकालीन यज्ञ

घृत आहुति

ओम् अग्नये स्वाहा।।
इदमग्नये इदन्न मम।।1।।
अग्नि के ऊपर उत्तर भाग में।

ओम् सोमाय स्वाहा।।
इदं सोमाय इदन्न मम।।2।।
अग्नि के ऊपर दक्षिण भाग में।

JALA SECHAN MANTRA

(pouring of water around the Havan kund)

Om adite anumanyaswa
(East side – starting from South to North).

Om anumate anumanyaswa
(West side – starting from South to North**).**

Om saraswatyanu manyaswa.
(North side – starting from West to East).

Om deva savitah prasuva Yajnam prasuva Yajnapatim bhagaaya. Divyo gandharvah ketapooh ketam nah punaatu vaachaspatir vaacham nah swadatu.
(All directions starting from East**).**

PRAATAH KAALEEN YAJNA

AAGHAARAU- AAJYABHAAG-AAHUTI

(Oblations of Ghee)

Om agnaye swaahaa.
Idamagnaye idam na mama. {1}
(Offer this oblation into the fire in the Northern part of the Havan Kund, starting from West to East)

Om somaaya swaahaa.
Idam somaaya idam na mama. {2}
(Offer this oblation into the fire in the Southern part of the Havan Kund, starting from West to East)

ओम् प्रजापतये स्वाहा।।
इदं प्रजापतये इदन्न मम।।3।।
मध्य भाग मे।
ओम् इन्द्राय स्वाहा।।
इदमिन्द्राय इदन्न मम।।4।।
मध्य भाग मे

सामग्री व घृत की आहुति

ओम् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।1।।

ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।

ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।3।।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।। 4।।

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।।
इदमग्नये प्राणाय–इदन्न मम।।5।।

ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।।
इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।6।।

ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।7।।

Om prajaapataye swaahaa.
Idam prajaapataye idam na mama. {3}
(Offer this oblation in the centre of the fire)

Om indraaya swaahaa.
Idamindraaya idam na mama. {4}
(Offer this oblation in the center of the Havan Kund)

Oblations of Ghee and Saamagri

Om sooryo jyotir jyotih sooryah swaahaa. {1}

Om sooryo varcho jyotirvarchah swaahaa. {2}

Om jyotih sooryah sooryo jyotih swaahaa. {3}

Om sajoordevena savitraa sajoorushasendra vatyaa.
Jushaanah sooryo vetu swaahaa. {4}

Om bhooragnaye praanaaya swaahaa.
Idam agnaye praanaaya idam na mama. {5}

Om bhoovar vaayave apaanaaya swaahaa.
Idam vaayave apaanaaya idam na mama. {6}

Om swara adityaaya vyaanaaya swaahaa.
Idam aadityaaya vyaanaaya idam na mama. {7}

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान व्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।8।।

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।9।।

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।10।।

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।।11।।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।12।।

Om Bhoorbhuvah swargni vaayvaa dityebhyah praana apaana vyaanebhyah Swaahaa.
Idam Agni vayva adiyebhyah praana apaana vyaanebhyah idam na mama. {8}

Om aapo jyoti raso amaritam brahma bhoorbhuvah swarom swaahaa. [9}

Om yaam medhaam devaganah pitarashch upaasate.
Tayaa maamadya medhayaagne medhaavinam kuru swaahaa. {10}

Om vishwaani deva savitar duritaani paraasuva.
Yad bhadram tanna aasuva swaahaa. {11}

Om agne naya supathaa raaye asmaan vishwaani deva vayunaani vidwaan. Yuyo dhyasmajjuhuraana meno bhooyishthante name uktim vidhema swaahaa. {12}

सायंकालीन यज्ञ

घृत आहुति

ओम् अग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।।1।।

अग्नि के ऊपर उत्तर भाग में।

ओम् सोमाय स्वाहा।।
इदं सोमाय इदन्न मम।।2।।

अग्नि के ऊपर दक्षिण भाग में।

ओम् प्रजापतये स्वाहा।।
इदं प्रजापतये इदन्न मम।।3।।

मध्य भाग मे।

ओम् इन्द्राय स्वाहा।।
इदमिन्द्राय इदन्न मम।।4।।

मध्य भाग में

सामग्री व घृत की आहुति

ओम् अग्निर्ज्योति–र्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।1।।

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।

SAAYAMKAALEEN YAJNA

AAGHAARAU- AAJYABHAAG-AAHUTI

(Oblations of Ghee)

Om agnaye swaahaa.
Idamagnaye idam na mama. {1}
Offer this oblation into the fire in the northern part of the Havan Kund, starting from West to East.

Om somaaya swaahaa.
Idam somaaya idam na mama. {2}
Offer this oblation into the fire in the southern part of the Havan Kund starting from West to East.

Om prajaapataye swaahaa.
Idam prajaapataye idam na mama. {3}
Offer this oblation in the centre of the fire).

Om indraaya swaahaa.
Idamindraaya idam na mama. {4}
Offer this oblation in the centre of the Havan Kund.

Oblations of Ghee and Saamagri

Om agnir jyotir jyotiragnih swaahaa. {1}

Om agnir varcho jyotir varchah swaahaa. {2}

निम्न मन्त्र का मन में उच्चारण करके आहुति देवें।
ओम् अग्निर्ज्योति–र्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।3।।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या।
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।4।।

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।।
इदमग्नये प्राणाय–इदन्न मम।।5।।

ओम् भुववर्ायवेऽपानाय स्वाहा।।
इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।6।।

ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।7।।

ओम् भूर्भुवः स्वरग्नि वाय्वादित्येभ्यः प्राणापान
व्यानेभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।8।।

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों
स्वाहा।।9।।

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया
मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।10।।

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।।11।।

This oblation should be offered after reciting the Mantra mentally.
Om agnir jyotir jyotiragnih swaahaa. {3}

**Om sajoor devena savitraa sajooraatryendravatyaa.
Jushaano agnirvetu swaahaa. {4}**

**Om bhooragnaye praanaaya swaahaa.
Idam agnaye praanaaya idam na mama. {5}**

**Om bhoovar vaayave apaanaaya swaahaa.
Idam vaayave-apaanaaya idam na mama. {6}**

**Om swara adityaaya vyaanaaya swaahaa.
Idam aadityaaya vyaanaaya idam na mama. {7}**

Om Bhoorbhuvah swargni vaayvaa dityebhyah praana apaana vyaanebhyah Swaahaa. Idam agni vayvaadiyebhyah praana apaana vyaanebhyah idam na mama. {8}

Om aapo jyoti raso amaritam brahma bhoorbhuvah swarom swaahaa. {9}

**Om yaam medhaam devaganaah pitarashchopasate.
Tayaamaamadya medhayaagne medhaavinam kuru swaahaa. {10}**

**Om vishwaani deva savitar duritaani paraasuva.
Yad bhadram tanna aasuva swaahaa. {11]**

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।12।।

बृहद् यज्ञ

घृत आहुति

ओम् अग्नये स्वाहा।।
इदमग्नये इदन्न मम।।1।।

अग्नि के ऊपर उत्तर भाग में।

ओम् सोमाय स्वाहा।।
इदं सोमाय इदन्न मम।।2।।

अग्नि के ऊपर दक्षिण भाग में।

ओम् प्रजापतये स्वाहा।।
इदं प्रजापतये इदन्न मम।।3।।

मध्य भाग मे

ओं इन्द्राय स्वाहा।।
इदमिन्द्राय इदन्न मम।।4।।

मध्य भाग में

Om agne naya supathaa raaye asmaan vishwaani deva vayunaani vidwaan. Yuyo dhyasmajjuhuraana meno bhooyishthante name uktim vidhema swaahaa. {12}

BRIHAD YAJNA

(Oblations for special occasions)

AAGHAARAU- AAJYABHAAG-AAHUTI

(Oblations of Ghee)

Om agnaye swaahaa.
Idamagnaye idam na mama. {1}
Offer this oblation into the fire in the northern part of the Havan Kund, starting from West to East.

Om somaaya swaahaa.
Idam somaaya idam na mama. {2}
Offer this oblation into the fire in the southern part of the Havan Kund starting from West to East.

Om prajaapataye swaahaa.
Idam prajaapataye idam na mama. {3}
Offer this oblation in the centre of the fire.

Om indraaya swaahaa.
Idamindraaya idam na mama. {4}
Offer this oblation in the center of the Havan Kund.

व्याहृति आहुति

ओम् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।

ओम् भुवर्वायवे स्वाहा। इदम् वायवे इदन्न मम।।

ओम् स्वरादित्याय स्वाहा।
इदमादित्याय इदन्न मम।।

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।।

स्विष्टकृत आहुति

निम्न मन्त्र से भात या घृत की आहुति देवें

ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वम् स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।।
इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।।

प्राजापत्य आहुति

मौन आहुति (मन में बोलकर)
ओम् प्रजापतये स्वाहा।।
इदं प्रजापतये इदन्न मम।।

VYAAHRITI AAHUTI
(oblations of Ghee)

Om bhuragnaye swaahaa.
Idamagnaye idam na mama. {1}

Om bhuvarvayave swaahaa.
Idam vayave idam na mama. {2]

Om swaraadityaaya swaahaa.
Idmaadityaaya idam na mama. {3}

Om bhurbhuvah swaragni vaayvaadityebhyah Swaahaa.
Idamagni vaayvaadityebhyah idam na mama. {4}

SWISHTAKRIT AAHUTI
(Offer oblation of Bhaat or Gee)

Om yadasya karmano atyariricham yadwaa nyunamihakaram. Agnishtat swishtakrit vidyaat sarvam swishtam suhutam karotume. Agnaye swishta krite suhutahute sarva praayashchittaa hutinaam kaamaanaam samarddhayitre sarvannah kaamaant samarddhya Swaahaa.
Idamagnaye swishtakrite idam na mama.

PRAAJAAPATYA AAHUTI
(Offer oblation of Gee)
Om prajaapataye Swaahaa. (mentally recited)
Idam prajaapataye idam na mama.

पवमान आहुति

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।1।।

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाँचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।2।।

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्च सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।

ओम् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।।
इदं प्रजापतये इदन्न मम।।4।।

अष्टाज्याहुति

घृत व सामग्री की आहुति

ओम् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।।
इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।।1।।

PAVAMAAN AAHUTI

(oblations of Ghee)

Om bhuurbhuvah swah. Agna aayunshi pavasa aasuvourjjamisham cha nah. Aare baadhaswa duchchhunaam Swaahaa.
Idamagnaye pavamaanaaya idam na mama. {1}

Om bhuurbhuvah swah. Agnir rishih pavamaanah paanchajanyah purohitah. Tamimahe mahaagayam Swaahaa.
Idamgnaye pavaamaanaaya idam na mama. {2}

Om bhuurbhuvah swah. Agne pavaswa swapaa asme varchah sooviryam. Dadhadrayim mayi posham Swaahaa.
Idam aganaya pavamaanaya idam na mama. {3}

Om bhuurbhuvah swah. Prajaapate na tvadetaa nyanyo vishwaa jaataani paritaa babhuva. Yat kaamaaste juhumastanno astu vayam syaama patayo rayinaam Swaahaa.
Idam prajaapataye idam na mama. {4}

ASHTAAJYA AAHUTI

(oblations of Ghee and Saamagri)

Om twanno agne varunasya vidwaan devasya hedo avyaasisishthaah. Yajishtho vahanitama shoshuchaano vishwa dweshaansi pramumugdhyasmat Swaahaa.
Idamagni varunaabhyaam idam na mama. {1}

ओम् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।।2।।

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा।। इदं वरुणाय इदन्न मम।।3।।

ओम् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषी स्वाहा।। इदं वरुणाय इदन्न मम।।4।।

ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्य इदन्न मम।।5।।

ओम् अयाश्चाग्ने अस्यनभि शस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा।।
इदमग्नये अयसे इदन्न मम।।6।।

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।।
इदं वरुणाय आदित्याय अदितये च इदन्न मम।।7।।

Om sa twanno agne-avamo bhavoti nedishtho asyaa ushaso vyshtau. Ava yakshwa no varunam raraano vihi mridikam suhavo na edhi swaahaa.
Idamagni varunaabhayaam idam na mama. {2}

Om imam me varuna shrudhi havamadyaa cha mridaya. Twaamavasyuraa chake swaahaa.
Idam varunaaya idan na mama. {3}

Om tattwaa yaami brahmanaa vandamaana stadaa shaaste yajmaano havirbhih. Ahedmaano varuneha bodhyurushansa maa na aayuh pra moshih swaahaa.
idam varunaaya idam na mama. {4}

Om ye te shatam varuna ye sahasram yajniyaah paashaa vitataa mahaantah. Tebhir no adya savitota vishnurvishwe munchantu marutah swarkaah Swaahaa.
Idam varunaaya savitre vishnave vishwebhyo devebhyo marudbhyah swarkebhyah idam na mama. {5}

Om ayaaschaagne asyanabhishastipaashcha satya mittwamayaasi. Ayaano Yajnam yahaasayaya no dhehi bheshajam Swaahaa.
Idamagnaye ayase idam na mama. {6}

Om udattamam varuna paasha masmadava dhamam vimadhyamam shrathaaya. Athaa vayamaaditya vrate tavaa naagaso aditaye syaama swaahaa.
Idam varunaaya aadityaayaa ditaye cha idam na mama. {7}

ओम् भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।।
इदं जातवेदोभ्याम् इदन्न मम।।8।।

पूर्ण आहुति

निम्न मन्त्र से तीन बार आहुति देवें।

ओम् सर्वम् वै पूर्णम् स्वाहा।।

Om bhavatannah samanasau sacheta saavarepasau.
Maa yajnam himsishtam maa yajanapatim jaatavedasau shivau bhavatamadya nah swaahaa.
Idam jaatavedobhyaam idam na mama. {8}

POORNA AAHUTI

Om sarvam vai poornam swaahaa.
(three times)

प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए।।

वेद की बोलें ऋचाऐं, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।

अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।

नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग–पीडित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें।।

भावना मिट जाये मन से, पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होंवें, यज्ञ से नरनार की ।।

लाभकारी हो हवन हर, प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हो, शुभ गन्ध को धारण किये।।

स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
"इदं न मम" का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।

प्रेम रस में तृप्त होकर, वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप, करुणा, आपकी सब पर रहे।।

PRAARTHANA

Pujaneeya prabho hamaare bhaava ujjaval kijie.
Chhod deven chhal kapat ko maansik bal dijie.

Ved ki bolen richaaen satya ko dhaaran karen.
Harsha me hon magna saare shok saagar se taren.

Ashwamedhaadik rachaayen yajna par upkaar ko.
Dharma maryaada chalaakar laabh den sansaar ko.

Nitya shraddhaa bhakti se yajnaadi ham karten rahen.
Rog peedit vishwa ke santaap sab harten rahen.

Bhaavanaa mit jaaye man se paap atyaachaar ki.
Kaamnaayen purna honven Yajna se narnaar ki.

Laabhkari ho Havan har praanadhaari ke liye.
Vaayu jal sarvatra ho shubh gandha ko dhaaran kiye.

Swaarthbhaava mite hamaaraa prem path vistar ho.
Idam na mam kaa saarthak pratyek me vyavahaar ho.

Prem rasa me tript hokar vandanaa ham kar rahe.
'Naath' karunarup karuna aapki sab par rahe.

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन, धान धान्य के भण्डारी।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

जन्म दिवस यज्ञ

ओम् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधाम्।
आगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे।।1।।

ओम् सं मा सिंचान्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः।
सं मायमग्निः सिंचातु प्रजया च धानेन च
दीर्घमायुः कृणोतु मे।।2।।

ओम् सं मा सिचान्त्वादित्याः सं मा सिचन्त्वग्नयः।
इन्द्रः समस्मान् सिंचतु प्रजया च धानेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे।।3।।

ओम् सं मा सिंचान्त्वरुषः समर्का ऋषयश्च ये।
पूषाः समस्मान् सिंचतु प्रजया च धानेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे।।4।।

PRAYER FOR THE WELFARE OF ALL

Sarve bhavantu sukhinah sarve santu niraamayaa.
Sarve bhadraani pashyantu maa kashchiddukhabhagbhavet.

He Isha Sab sukhi hon koi na ho dukhaari.
Sab ho nirog bhagvan dhan dhaanya ke bhandaari.

Sab bhadra bhaava dekhen sanmaarg ke pathik hon.
Dukhiyaa na koi hove srishti me praandhaari.

BIRTHDAY ANNIVERSARY

Upa priyam panipnatam yuvaaunamaahutivridham.
Aaganma bibhrato namo deerghamaayuh krinotu me. {1}

Sam maa sinchantu marutah sam pusha sam brihaspatih. Sam maayamagnih chinchatu prajayaa cha dhanen cha dirghmaayuh krinotu me. [2}

Sam maa sinchantvaadityaah sam maa sinchantvagnayah. Indrah samasmaan sinchatu prajayaa cha dhanena cha dirghmaayuh krinotu me. {3}

Sam maa sinchantvarushah samarkaa rishyashcha ye. Pushaah samasmaan sinchatu prajayaa cha dhanena cha dirghamaayuh krinotu me. {4}

ओम् सं मा सिंचातु पृथिवी सं मा सिंचान्तु या दिशः। अन्तरिक्षं समस्मान् सिंचतु प्रजया च धानेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे।।5।।

ओम् सं मा सिंचान्तु कृष्टयः सं मा सिंचान्त्वोषधीः। सोमः : समस्मान् सिंचतु प्रजया च धानेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे।।6।।

ओम् सं मा सिंचान्तु नद्यः सं मा सिंचान्तु सिन्धावः। समुद्रः समस्मान् सिंचतु प्रजया च धानेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे।।7।।

विवाह दिवस

ओम् तेन भूतेन हविषायम् आप्यायतां पुनः। जाया यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम्।।1।।

ओम् त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम्। त्वष्टा सहस्रमायूंषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम्।।2।।

ओम् सं वः पृच्यतां तन्वः सं मनांसि समु व्रता। सं वो अयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत्।।3।।

Sam maa chinchatu prithivi sam maa sinchantu yaa dishah. Antariksham samasmaan sinchatu prajayaa cha dhanena cha dirghamaayuh krinotu me. {5}

Sam maa sinchantu krishtayah sam maa sinchantvoshadhih. Somah samasmaan sinchatu prajayaa cha dhanena cha dirghamaayuh krinotu me. {6}

Sam maa sinchantu nadyah sam maa sinchantu sindhavah. Samudrah samasmaan sinchatu prajayaa cha dhanena cha dirghamaayuh krinotu me. {7}

WEDDING ANNIVERSARY

Tena bhutena havishaayama aapyaayataam punah.
Jaayaa yaamasmaa aavaakshustaam rasenaabhi vardhataam. {1}

Twashta jaayaamajanayat twashtaasyai twaam patim. Twashtaa sahasramaayunshi deerghamaayuh krinotu vaam. {2}

Sam vah prichyataam tanvah sam manaamsi samu vrataa. Sam vo ayam brahmnaspatirbhagah sam vo ajigamat. {3}

ओम् यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः। अश्लोणा अंगैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्।।4।।

ओम् ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तोषां श्रीर्मयि कल्पताम् अस्मिन् लोके शतं समाः।। 5।।

पारिवारिक शुभकामना

ओम् स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरूषेभ्यः। विश्वं सुभूतं सूविदुत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।।1।।

ओम् योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेना प्यायस्व। आ वयं प्यासिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन।।2।।

रोगनिवारण कामना

ओम् जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासं स्वाहा।।1।।

ओम् उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासं स्वाहा।।2।।

Yatraa suhaardah sukrito madanti vihaaya rogam tanvah swaayaah. Ashlonaa angairahutaah swarge tatra pashyem pitarou cha putraan. {4}

Ye samaanaah samanaso jeevaa jeeveshu maamakaah. Teshaam shrirmayi kalptaam asminnaloke shatam samaah. {5}

PRAYER FOR THE WELFARE AND PROSPERITY OF THE FAMILY

Swasti maatra uta pitre no astu swasti gobhyo jagate purushebhyah. Vishwam subhutam suvidatram no astu jyogeva drishema suryam.

Yosmaan dveshti yam vayam dwishmastasya twam praanenaa pyaayaswa. Aa vayam pyaasishimahi gobhirashwaih prajayaa pashubhirgrihai dhanen.

PRAYER FOR HEALTH

Om jivaa stha jivyaasam sarvamaayu jivyaasam Swaahaaa. {1}

Om Upajivaa sthopa jivyaasam sarvamaayu jivyaasam Swaahaaa. {2}

ओम् संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासं स्वाहा।।3।।

ओम् जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासं स्वाहा।।4।।

ओम् वर्च आ धेहि मे तन्वां सह ओजो वयो बलम्। इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय प्रति गृहणामि शतशारदाय।।5।।

ओम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।।6।।

Om Samjivaa stha sam jivyaasam sarvamaayu jivyaasam Swaahaaa. {3}

Om Jivalaa stha jivyaasam sarvamaayurjivyaasam swaahaa. {4}

Om Varcha aa dhehi me tanvaam saha ojo vayo balam. Indriyaay twaa karmane viryaaya prati grihanaami shatshaardaaya. {5}

Om Triyambakam yajaamahe sugandhim pushtivardhanam.
Urvaarukmiva bandhanaanmrityormukshiya maamritaat swaahaa. {6}

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ3म् । आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधि महारथो
जायताम् । दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु सप्तिः
पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः
पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

राष्ट्र हमारे में ब्राह्मण हों ब्रह्म तेज से भरे हुए ।
महारथी योद्धा हों क्षत्रिय शूरवीरता भरे हुए ।।

गायें दूध बहुत देती हों, बैल बली ढोने वाले ।
घोडे तेज रथों में बैठे, वीर विजय पाने वाले ।।

महिलायें अति बुद्धिमती हों, कार्यों में सब भाँति कुशल ।
वीर युवक यजमान पुत्र हों, धीर वीर प्रतिभा वाले ।।

बादल बरसें ठीक समय पर, फलवाली औषधियाँ हों ।
हो कल्याण सदा हम सबका, शुद्धकार्य शुभ मतियाँ हों ।।

Vedic Raashtriya Prarthanaa

Om. Aa brahaman braahamano brahamvarchasi jaayataam. Aa raashtre raajanyah shoor ishavyoti vyaadhi mahaaratho jaayataam. Dogdhri dhenurvodhaa nadvaanaashu saptih purandhiryoshaa jishnuh ratheshthaa sabheyo yuvaasya yajmaanasya veero jaayataam. Nikaame nikaame na parjanyo varshatu phalvatyo na oshadhaya pachyantaam yogakshemo nah kalptaam.

Raashtra hamaare me brahaman hon, brahma tej se bhare hue.
Mahaarathi yodhaa hon kshatriya, shuravirataa bhare hue.

Gaayen dudha bahuta deti hon, bail bali dhone vale.
Ghode tej rathon me baithen, veera vijaya pane vale.

Mahilayen ati buddhimati hon, kaaryon me sab bhanti kushal.
Veer yuwak yajamaan putra hon, dheer veer pratibha vale.

Badal barasen theeka samaya par, phala wali oshadhiyan hon.
Ho kalyaan sadaa ham sabakaa, shuddha karya shubha matiyan hon.

भक्ति गीत–1

जय जय पिता परम आनन्ददाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता।।

अनन्त अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्त्ता संहर्त्ता।।1।।

सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।।2।।

मैं लालित व पालित हूँ पितृस्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझसे ताता।।3।।

करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को।
करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्राता।।4।।

मिटाओ मेरे भय आवागमन के।
फिरूँ न जन्म पाता और बिलबिलाता।।5।।

बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु।
कि जिसको मै अपनी अवस्था सुनाता।।6।।

'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझको।
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।।7।।

Bhakti Bhajan-1 (Bhakta Amichand)

Jaya jaya pita param aanand daataa.
Jagdaadi kaaran, mukti pradaataa.

Ananta anaadi visheshan hain tere.
Srishi kaa srishta too, dhartaa sanhartaa.

Suksham se suksham too, hai sthool itanaa.
Ki jisame yah brahmaand, saaraa samaataa.

Main laalita va paalita hun, pitri sneha kaa.
Yaha praakrit sambandha hai, tujhase taataa.

Karo shuddha nirmal, mere aatmaa ko.
Karun mai vinaya nitya, saayam va praataa.

Mitaao mere bhaya, aavaagaman ke.
Phirun na janam paataa, aur bilbilaataa.

Binaa tere hai kaun, deenana ka bandhu.
Ki jisako mai apani avasthaa sunaataa.

'Ami' rasa pilaao, kripaa karake mujhako.
Rahun sarvadaa teri, kirti ko gaataa.

विश्व कल्याण–2

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से।।

ऋषियों ने उँचा माना है स्थान यज्ञ का।
करते हैं दुनिया वाले सब सम्मान यज्ञ का।
दर्जा है तीन लोक में महान यज्ञ का।
भगवान का है यज्ञ और भगवान यज्ञ का।
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से।1।

करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्निदेव।
डालो विहित पदार्थ शुद्ध खाते हैं अग्निदेव।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुँचाते हैं अग्निदेव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते हैं अग्निदेव।
पैदा अनाज होता है महान यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।2।

शक्ति व तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में।
माना है इसको श्री कृष्ण भगवान राम ने।
होता है पाणिग्रहण भी इसी के सामने।
मिलता राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से।3।

सुख शान्तिदायक मानते हैं, सब मुनि इसे।
वशिष्ठ विश्वामित्र और नारद मुनि इसे।
इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता।
भय यज्ञकर्ता को कभी किंचित नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से।4।

Bhajan- 2

Hotaa hai saare vishwa kaa, kalyaan Yajna se.
Jaldi prasanna hote hain, bhagvaan Yajna se.

Rishiyon ne unchaa maanaa hai Sthaan yajna kaa.
Karate hain duniya waale sab sammaan yajna kaa.
Darjaa hai teen loka me mahaan yajna kaa.
Bhagavaan kaa hai yajna aur bhagavaan yajna kaa.
Jaataa hai deva loka me insaan yajna se.

karanaa ho Yajnaa prakat ho jaate hain agnideva.
Daalo vihita padaartha shudhdha khaaten hain agnideva.
Sabako prasaad Yajnaa kaa pahuchate hain agvideva.
Baadal banaake bhumi par barsaate hain agnideva.
Paidaa anaaja hotaa hai mahaan Yajnaa se.
Hotaa hai saarthaka veda kaa vijnaan Yajna se.

Shakti va teja yash bharaa isa shudhdha naama me.
Saakshi yahi hai vishwa ke hara neka kaam me.
Maanaa hai isako shri krishana bhagavaaan Raam ne.
Hotaa hai paanigrahana bhi iseeke saamane.
Milataa hai raajya keerti santaana Yajnaa se.

Sukha shaantidaayaka maanate hain saba muni ise.
Vashishtha vishwaamitra aur naarada muni ise.
Isakaa pujaari koi bhi paraajita nahin hotaa.
Bhaya Yajnaakartaa ko kabhi kinchit nahin hotaa.
Hoti hain saari mushkilen aasaan Yajnaa se

चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश नसीब है।
हम सब में आये यज्ञ के अर्थों की भावना।
'जख्मी' के सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना।
होती है पूर्ण कामना महान यज्ञ से।5।

मन मन्दिर–3

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।

किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तिहारा पाया।।
हारे ऋषि मुनि धार ध्यान। बना..... ।1।

तू ही जल में तू ही थल में, तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान। बना..... ।2।

तू हर गुल मे तू बुलबुल में, तू हर डाल के हर पातन में।
तू हर दिल में मूर्तिमान। बना..... ।3।

तूने राजा रंक बनाये, तू ने भिक्षुक राज बिठाये।
तेरी लीला ईश महान। बना..... ।4।

Chahe ameer hai koi chaahe gareeba hai.
Jo nitya Yajnaa karataa hai vaha khushnaseeba hai.
Ham sab me aaye Yajnaa ke arthon ki bhaavanaa.
'Jakhmi' ke sachche dila se hai yah shreshtha kaamanaa.
Hoti hai purna kaamanaa mahaan Yajnaa se.

Bhajan-3

Tere pujana ko bhagavaan, banaa mana mandir aalishaan.

Kisane jaani teri maayaa, kisane bheda tihaaraa paayaa.
Hare rishi muni dhara dhyaan, banaa mana mandir aalishaan.{1}

Tu hi jala me tu hi thala me, tu hi mana me tu hi vana me.
Teraa rupa anoop mahaan, banaa mana mandir aalishaan. {2}

Tu bulabula me tu hara gula me, tu hara daara ke hara paatan me.
Tu hara dila me murtimaan, banaa mana mandir aalishaan. {3}

Tune raajaa ranka banaaye, tune bhikshuk raaj bithaye.
Teri leela isha mahaana, banaa mana mandir aalishaan. {4}

मंगल कामना–4

सदा फूलता फलता भगवन, यह याजक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका, सदा आपसे प्यार रहे।।

मिथ्या कर अभिमान कभी न, जीवन का अपमान करें।
देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करें।।
प्रभु आपकी आज्ञापालन, करता हर नरनार रहे।।1।।

मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आपकी।
घडी न आने पावे इन पर, कोई भी सन्ताप की।।
यही कामना प्रभु आपसे, कर हम बारम्बार रहे।।2।।

दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों।
सेवा के साँचे में सबने, जीवन अपने ढाले हों।।
बच्चा–बच्चा परिवार का, बनकर श्रवणकुमार रहे।।3।।

बने रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर हाल में।
हाल चाल हो कैसा इनका, रहें मस्त हर हाल में।।
ताकि 'देश' बसाया इनका, सुखदायी संसार रहे।।4।

धन्य है तुझको ए ऋषि–5

धन्य है तुझको ए ऋषि, तूने हमें जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया।।

अँधों को आँखें मिल गई, जाति में जान आ गई।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया।1।

वाणी में क्या तासीर थी स्वामी जी तेरी बात पर।
कितने शहीद हो गये, कितनों ने सर कटा दिया।2।

Mangala Kaamanaa-4

Sadaa phoolataa phalataa bhagwana yaha yaajaka parivwara rahe.
Rahe pyaar jo kisi se inakaa, sadaa aapase pyaara rahe.

Mithyaa kara abhimaan kabhi na, jivan kaa apamaan Karen.
Devajano ki sevaa karake, vedaamrit kaa paan Karen.
Prabhu aapaki aajnaapaalan, karataa har narnaar rahe.

Mile sampadaa jo bhi inako, usako maanen aapaki.
Ghadi na aane paave in par, koi bhi santaap ki.
Yahi kaamanaa prabhu aapase, kara ham baarambaar rahe.

Duniyadaari rahe chamakti, dharma nibhaane walen hon.
Sevaa ke saanche me sabane, jivan apane dhaalen hon.
Bachchaa bachchaa pariwaar kaa, bankera shravankumaar rahe.

Bane rahen santoshi saare, jivan ke hara haala me.
Haala chaala ho kaisaa inkaa, rahen masta hara haal me.
Taaki 'Desh' basaayaa inkaa, sukhadaayi sansaar rahe.

Bhajan-5

Dhanya hai tujhako e rishi, tune hame jaga diya.
So so ke lut rahe the ham, tune hame bacha liya.

Andhon ko aankhen mil gayi, jaati me jaan aa gayi.
Jaadu sa kya chala diya, amrit sa kyaa pila diya. {1}

Vaani me kya taasir thi, swami ji teri baat par.
Kitane shahid ho gaye, kitano ne sar kata diya. {2}

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने पे खाई गोलियाँ।
हँस हँस के हंसराज ने, तन मन व धन लुटा दिया।3।

अपने लहु से लेखराम, तेरी कहानी लिख गया।
तूने ही लाला लाजपत, शेरे हिन्द बना दिया।4।

तेरे दिवाने जिस घडी, दक्षिण दिशा को चल दिये।
वैदिक धर्म पे हो फिदा, दुनिया का दिल दहला दिया।5।

ध्वज गीत–6

आर्य राष्ट्र का प्यारा झण्डा उँचा सदा रहेगा।
उँचा सदा रहेगा झण्डा, उँचा सदा रहेगा।।

आँधी और तूफान बादलों से यह टक्कर लेगा।
नहीं झुकेगा, नहीं झुकेगा, झण्डा नहीं झुकेगा।1।

आसमान में यह फहराये, सागर में लहराये।
जहाँ जहाँ जाये यह झण्डा, यह सन्देश सुनाये।।
स्वस्ति शान्ति का परम लक्ष्य ले, जग स्वाधीन करेगा।2।

ऋषि मुनियों की आस्तिकता का, ओम नाम है प्यारा।
रक्त रंग में क्षात्र धर्म की बहती आई धारा।।
सूर्य चक्र का चक्र हमारा, जग आलोक करेगा।3।

सदा चाहते हम दुनिया में, राम राज्य का लाना।
सदा चाहते हम दुखियों के दु:ख में हाथ बढाना।।
सत्य न्याय के लिए हमारा, आगे कदम बढेगा।4।

Shraddha se shraddhananda ne, seene pe khaayi goliyan.
Hans hans ke hansraaj ne, tan man va dhan lutaa diya. {3}

Apane lahoo se lekharam teri kahaani likha gaya.
Tune hi lala lajpat, shere hind banaa diya. {4}

Tere divane jis ghadi, dakshin disha ko chal diye.
Vaidic dharma pe ho phida, duniya ka dil dahaladiya. {5}

Dhwaj geet-6

Arya raastra kaa pyaaraa jhandaa, unchaa sadaa rahegaa.
Unchaa sadaa rahegaa jhandaa, unchaa sadaa rahegaa.

Aandhi or tufaan baadalon se yah takkar legaa.
Nahi jhukegaa nahi jhukegaa, jhandaa nahin jhukegaa. {1}

Aasamaan me yah faharaaye, saagar me laharaaye.
Jahaan jahaan jaaye yah jhandaa, yah sandesh sunaaye.
Swasti shaanti kaa param lakshya le, jag swaadheen karegaa.{2}

Rishi muniyon ki aastiktaa kaa, om naam hai pyaaraa.
Rakta rang me kshaatra dharm ki, bahati aayi dhaaraa.
Surya chakra kaa chakra hamaaraa, jag aalok karegaa. {3}

Sadaa chaahate ham duniya me, raam raajya kaa laanaa.
Sadaa chaahate ham dukhiyon ke dukh me haath badhana.
Satya nyaaya ke liye hamaaraa, aage kadam badhegaa.{4}

वैदिक आरती–7

ओम् जय जगदीश पिता, प्रभु जय जगदीश पिता।
विश्व विरंच विधाता, जगत्राता सविता।।

अनन्त अनादि अजन्मा, अविचल अविनाशी।
सत्य सनातन स्वामी, शंकर सुखराशी।।

सेवक जन सुखदायक, जननायक तुम हो।
शुभ सुख शान्ति सुमंगल, वरदायक तुम हो।।

मैं सेवक शरणागत, तुम मेरे स्वामी।
हृदय पटल में प्रकटो, प्रभु अन्तर्यामी।।

काम क्रोध मद मोह कपट, छल व्यापे नहीं मन में।
लगन लगे मम मन की, तेरे गुण वर्णन में।।

नित्य निरंजन निशदिन, तेरो ही जाप करें।
तव प्रताप से स्वामी, तीनों ही ताप हरें।।

पतित उद्धारण तारण, शरणागत तेरी।
भूले ना भटके भ्रम में, निर्मल मति मेरी।।

शुद्ध बुद्धि से मन में, तेरो ही वरण करें।
सब विधि छल बल तज के, तेरी शरण पडें।।
ओम जय जगदीश पिता।।

Vedic Aarti- 7

Om jai jagdish pita, prabhu jai jagdish pitaa.
Vishwa virancha vidhaataa, jag traataa savitaa.

Ananta anaadi ajanmaa, avichal avinaashi.
Satya sanaatan swami, Shankar sukha raashi.

Sevak jan sukhadayak, jan nayak tum ho.
Shubha sukha shanti sumangal, vardayak tum ho.

Mai sevak sharanagat, tum mere swami.
Hridaya patal me prakato, prabhu antaryami.

Kaam krodha mad moha kapata, chal vyape nahi man me.
Lagan lage mam man ki, tere gun varnan me.

Nitya niranjan nish din, tero hi jaap Karen.
Tav pratap se swami, teeno hi taap haren.

Patit uddharan taaran, sharnaagat teri.
Bhoole na bhatake bhram me, nirmal mati meri.

Shuddha buddhi se man me, tero hi varan Karen.
Sab vidhi chal bal taj ke, teri sharan paden.
Om jai jagdish pita.

अथ स्वस्तिवाचनम्

ओ3म्। अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।1।।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।2।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यतिदिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।3।।

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।4।।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।5।।

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।6।।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।।7।।

SWASTI VAACHANAM
(Mantras for bliss and prosperity)

**Agnimide purohitam Yajnasya devamritwijam.
Hotaaram ratnadhaatamam. {1}**

**Sa nah piteva sunve agne supaayano bhava.
Sachswaa nah swastaye. {2}**

Swasti no mimeetaamashwina bhagah swasti devyaditiranarvanah. Swasti pushaa asuro dadhaatu nah swasti dyavaprithivi suchetunaa. {3}

Swastaye vaayumup bravaamahai somam swasti bhuvanasya yaspatih. Brihaspatim sarvaganam swastaye swastaya adityaaso bhavantu nah. {4}

Vishwe devaa no adyaa swastaye vaishwaanaro vasuragni swastaye. Devaa avantvribhavah swastaye swasti no rudrah paatvamhasah. {5}

Swasti mitraa varunaa swasti pathye revati. Swasti na indrashchaagnishcha swasti no adite kridhi. {6}

Swasti panthaa manucharema suryaachandramaasaviva. Punardadataaghntaa jaanta sangame mahi. {7}

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।8।।

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान् स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये।।9।।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।10।।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।11।।

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये।।12।।

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः। त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये।।13।।

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये।।14।।

Ye devaanam yajniyaa yajniyaanaam manoryajtraa amrita ritajnaa. Te no raasantaamurugaayamadya yuyam paat swastibhih sadaa nah. {8}

Yebhyo maataa madhumatpinvate payah piyusham dyorditiradribarha. Uktha shushmaan vrishbharaantswapansastaam adityam anu madaa swastaye. {9}

Nrichakshaso animishanto arhanaa brihaddevaso amritatvamaanashu. Jyotirathaa ahimaya anaagaso divo vashamaanam vasate swastaye. {10}

Samraajo ye suvridho Yajnamaayayurprihvrita dadhire divi kshayam. Taam aa vivaasa namasaa suvriktibhirmaho aadityam aditim swastaye. {11}

Ko vah stomam raadhati yam jujoshatha vishwe devaaso manusho yatishthana. Ko vo adhvaram tuvijaata aram karadyo nah parshdatyamha swastaye. {12}

Yebhyo hotraam prathaamaamaayeje manuh samidhaagnirmanasaa sapta hotribhih. Ta aaditya abhayam sharma yachchata sugaa nah karta supathaa swastaye. {13}

Ya ishire bhuvanasya prachetaso vishwasya sthaaturjagatascha mantavah.
Te nah kritaadkritaden sasparyadyaa devaasah pipritaa swastaye. {14}

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहे अंहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।।15।।

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।।16।।

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।।17।।

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रा–मघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये।।18।।

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।19।।

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।।20।।

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।21।।

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।।22।।

Bhareshwindram suhavam havaamahe ahomucham sukritam daivyam janam. Agnim mitram varunam saataye bhagam dyaavaaprithivi marutah swastaye. {15}

Sutraamaanam prithivim dyaamanehasam susharmaanamaditim supranitim. Daivim naavam swaritraamanaagasam sravantimaa ruhemaa swastaye. {16}

Vishwe yajatraa adhi vochatotaye traayadhvam no durevaayaa abhihrutah. Satyayaa vo devhutyaa huvem shrinvato devaa avase swastaye. {17}

Apaamivamapa vishwaamanaahutimapaaraatim durvidatraamaghaayatah. Aare devaa dwesho asmadyuyotanoruna sharma yachchtaa swastaye. {18}

Arishtah sa marto vishwa edhate pra prajaabhirjaayate dharmanaspari. Yamaadityaaso nayathaa sunitibhirati vishwaani duritaa swastaye. {19}

Yam devaaso avatha vaajasaatau yam shurasaataa maruto hite dhane. Praataryaavaanam rathmindra saansimarishyantamaa ruhemaa swastaye. {20}

Swasti nah pathyaasu dhanvasu swastyapsu vrijane swarvati. Swasti nah putrakritheshu yonishu swasti raaye maruto dadhaatana. {21}

Swastiriddhi prapathe shreshthaa rekna swastyabhi yaa vaamameti. Saa no amaa so arane nipaatu swaavesha bhavatu devagopaa. {22}

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।23।।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।24।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।25।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।26।।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।27।।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस् तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।28।।

Ishe tworje twaa vaayava stha devo vah savita praarpayatu shreshthatamaaya karmana aapyaayadhwamaghnyaa indraaya bhaagam prajaavatiranmivaa ayakshmaa maa va stena ishata maaghasham so dhruva asmin gopatau syaata bahvir-yajamanasya pashun paahi. {23}

Aa no bhadraah kratavo yantu vishwato adabdhaaso apritaasa udbhidah. Devaa no yathaa sadamidvridhe asannapraayuvo rakshitaaro divedive. {24}

Devaanaam bhadraa sumatirrijuayataam devaanaam ratirabhi no nivartataam. Devaanaam sakhyamupsedima vayam devaa na ayuh pratirantu jivase. {25}

Tamishaanam jagatastasthushaspatim dhiyanjinvamavase humahe vayam. Pushaa no yathaa vedsaamasadvridhe rakshitaa payuradabdhah swastaye. {26}

Swasti na indro vridhshravaah swasti nah pushaa vishwavedaah. Swasti nastaarkshyo arishtnemih swasti no brihaspatirdadhaatu. {27}

Bhadram karnebhih shrinuuyaama devaa bhadram pashyemaakshbhiryajtraah. Sthirairangaistushtuvam sastanu bhirvyashemahi devahitam yadaayuh. {28}

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।29।।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने ।।30।।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।31।।

इति स्वस्तिवाचनम्

Agna aa yaahi vitaye grinaano havyadaataye.
Ni hotaa satsi barhishi. {29}

Twamagne Yajnaanaam hotaa vishweshaam hitah.
Devebhirmaanushe jane. {30}

Ye trishaptaah pariyanti vishwaa rupaani bibhratah.
Vaachaspatirbalaa teshaam tanwo adya dadhaatu me. {31}

Here ends the Swastivaachanam

अथ शान्तिकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शंमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।।1।।

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ।।2।।

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ।।3।।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ।।4।।

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।।5।।

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ।।6।।

SHANTIKARANAM

(Mantras for Peace and Harmony)

Sham na indraagni bhavataamavobhih sham na indraavarunaa raathavyaa. Shamindraasomaa suvitaaya sham yoh sham na indraapushanaa vaajasaatau. {1}

Sham no bhagah shamu nah shansho astu sham nah purandhih shamu santu raayah. Sham nah satyasya suyamasya shansah sham no aryamaa purujaato astu. {2}

Sham no dhaata shamu dhartaa no astu sham na uruchi bhavatu swadhaabhih. Sam rodasi brihati sham no adrih sham no devaanaam suhavaani santu. {3}

Sham no agnirjyotiraniko astu sham no mitraavarunaavashwinaa sham. Sham nah sukritam sukritani santu sham na ishiro abhi vatu vatah. {4}

Sham no dyaavaaprithivi purvahutau shamantariksham drishaye no astu. Sham na oshdhirvanino bhavantu sham no rajasaspatirastu jushnuh. {5}

Sham na indro vasubhirdevo astu shamaadityebhirvarunah sushansah. Sham no rudro rudrebhirjalaasha sham nastwashta gnabhiriha shrinotu. {6}

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।7।।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।8।।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।9।।

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। श नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।10।।

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।।

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ।।12।।

Sham nah somo bhavatu braham sham nah sham no graavaanah shamu santu Yajnaah. Sham nah swarunaam mitayo bhavantu sham nah praswah shamvastu vedih. {7}

Sham nah surya uruchakshaa udetu sham nashchatasrah pradisho bhavantu. Sham nah parvataa dhruvayo bhavantu sham nah sindhavah shamu santwapah. {8}

Sham no aditirbhavatu vratebhih sham no bhavantu marutah swarkaah. Sham no vishnuh shamu pushaa no astu sham no bhavitram shamvastu vaayuh. {9}

Sham no devah savitaa traayamaanah sham no bhavantushaso vibhatih. Sham nah parjanyo bhavatu prajaabhyah sham nah kshetrasya patirastu shambhu. {10}

Sham no devaa vishwadevaa bhavantu sham saraswati saha dheebhirastu. Shambhishaachah shamuraatishaachah sham no divyaah paarthivaah sham no apyaah. {11}

Sham nah satyasya patayo bhavantu sham no arvantah shamu santu gaavah. Sham na ribhavah sukritah suhastah sham no bhavantu pitaro haveshu. {12}

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरूरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः।।13।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।14।।

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु।।15।।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।।16।।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।।17।।

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।18।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।19।।

Sham no aja ekapaad devo astu sham no ahirbudhnyah sham samudarah. Sham no apaam napaatperurastu sham nah prishnirbhavatu devagopaah. {13}

Indro vishwasya raajati.
Sham no astu dwipade sham chatushpade. {14}

Sham no vatah pavataam sham nastapatu suryah.
Sham nah kanikraddevah parjanyo abhivarshatu. {15}

Ahaani sham bhavantu nah sham raatri prati dhiyataam. Sham na indraagni bhavataamavobhih sham na indraavarunaa raatahavyaa. Sham na indraapushanaa vaajasaatau shamindraasomaa suvitaaya sham yoh. {16}

Sham no devirabhishtaya aapo bhavantu peetaye.
Sham yorabhisravantu nah. {17}

Dyouh shaantirantariksham shaantih prithivi shaantiraapah shaantiroshadhayah shaantih. Vanaspatayah shaantirvishwe devaah shaantirbrahama shaantih sarvam shaantih shaantireva shaantih saa maa shaantiredhi. {18}

Tachchakshurdevahitam purastaachchukramuchcharat. Pashyema shardhah shatam jivema shardah shatam shrinuyaam shardah shatam prabravaama shardah shatamadinaah syaama shardah shatam bhuyashcha shardah shataat. {19}

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।20।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।21।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।22।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।23।।

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।24।।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयते अभीशुभिर्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।25।।

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्नोषधीभ्यः।।26।।

Yajjaagrato durmudaiti daivam tadu suptasya tathaivaiti. Durangamam jyotishaam jyotirekam tanme manah shivasankalpamastu. {20}

Yen karmaanyapaso manishino yajne krinvanti vidatheshu dhiraah. Yadpurvam yakshamantah prajaanaam tanme manah shivasankalpamastu. {21}

Yatprajaanmuta cheto dhritishcha yajjyotirantaramritam praajasu. Yasmaanna rite kanchana karma kriyate tanme manah shivasankalpamastu. {22}

Yenedam bhutam bhuvanam bhavishyatparigritam amriten sarvam. Yen Yajnastaayate saptahotaa tanme manah shivasankalpamastu. {23}

Yasminnrichah saama yajumshi yasmin pratishthitaa rathanaabhaavivaaraah. Yasminaschitam sarvamotam prajaanaam tanme manah shivasankalpamastu. {24}

Sushaarathirashwaaniva yanmanushyaanneniyate abhishubhirvaajinah iva. Hritpratishthitam yadajiram javishtham tanme manah shivasankalpamastu. {25}

Sa nah pavaswa sham gave sham janaaya shamarvate.
Sham raajannoshadhibhyah. {26}

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।27।।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।।28।।

इति शान्तिकरणम्

Abhayam nah karatyantariksham abhayam dyaava prithivi ubhe ime. Abhayam pashchaad abhayam purastaad uttaraad adhaarad abhayam no astu. {27}

Abhayam mitraad abhayam amitraad abhayam Jnaataad abhayam parokshaat. Abhayam nakatam abhayam divaa nah sarvaa aashaa mama mitram bhavantu. {28}

Here ends the Shaantikaranam

संगठन सूक्त

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।1।।

हे प्रभु तुम शक्तिशाली, हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन वृष्टि को।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।2।।

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम, कर्त्तव्य के मानी बनो।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।3।।

हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हुँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।4।।

हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से, जिस से बढे सुख सम्पदा।।

SANGATHAN SUKTA

(Prayer for unity)

Samsmidyuvase vrishannagne vishwanyarya aa.
Idaspade samidhyase sa no vasunya bhara. {1}

He prabho tum shaktishali ho banaate srishti ko.
Ved sab gaate tumhe hain, keejiye dhan vrishti ko.

Sangachchhadhwam samvaddhwam sam vo manaansi jaayataam.
Devaa bhaagam yathaapurve sam janaanaa upaasate. {2}

Prem se milkar chalo, bolo sabhi Jnaani bano.
Poorvajon ki bhanti tum, kartavya ke maani bano.

Samaano mantra samiti samaani samaanam manaha sah chittameshaam.
Samaanam mantramabhi mantraye vah samaanena vo havisha juhomi. {3}

Hon vichaar samaan sabke, chitta man sab ek hon.
Jnaan detaa hun baraabar, bhogya paa sab nek hon.

Samaani va aakutih samaanaa hridayaani vah.
Samaanamastu vo mano yathaa vah susahaasati. {4}

Hon sabhi ke dil tathaa, sankalpa avirodhi sadaa.
Mana bhare hon prem se, jis se badhe sukha sampadaa.

शान्ति गीत–8

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।

जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में।
सकल विश्व के जड चेतन में।। शान्ति कीजिए........।

ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धान में,
और शूद्र के हो चरणन में।। शान्ति कीजिए.........।

शान्ति राष्ट निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में।
जीव मात्र के तन में मन में,
और जगती के हो कण कण में।। शान्ति कीजिए........।

भोजन प्रार्थना

ओ3म्। अन्नपते अन्नस्य नो देहि–अनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

Shanti Geet- 8

Dyouh shaantirantariksham shaantih prithivi shaantiraapah shaantiroshadhayah shaantih. Vanaspatayah shaantirvishwe devaah shaantirbrahama shaantih sarvam shaantih shaantireva shaantih saa maa shaantiredhi.

Shanti keejiye prabhu tribhuvan me.

Jal me thal me aur gagan me,
antariksha me agni pawan me.
Aushadhi vanspati van upavan me.
Sakal vishwa ke jad chetan me. Shanti keejiye--------.

Brahman ke upadesha vachan me.
Kshatriya ke dwaaraa ho ran me.
Vaishya jano ke hove dhan me.
Aur shudra ke ho charnan me. Shanti keejiye--------.

Shanti rastra nirmaan srijan me.
nagar graam me aur bhavan me.
Jiva maatra ke tan me man me.
Aur jagti ke ho kan kan me. Shanti keejiye--------.

PRAYER FOR FOOD

Annapate annasya no dehi anameevasya shushminah. Pra pra daataaram taarisha urjam no dhehi dwipade chatushpade.